[Shri Vayalar Ravi]

this kind of terrorist groups. That has been completely dismantled. I appeal to you to forget the political prejudices and re-establish this kind of intelligence agency which can find out not only in this country but outside also as to who are working against the national interests and the interests of Indians. Then only, Sir, we can protect the lives of our people abroad. I appeal to the hon. Minister to come out with a statement as to what happened, what are the steps taken and so on.

We are very glad—and I express my happiness again—at the survival of the Indian people who stayed at that hotel.

SHRI SAMAR GUHA (Contai): Mr. Speaker, Sir, I want to draw your attention to this. You have unnecessary allowed my friend to mention my name; you should have asked him not to mention—he should not have mentioned my name. But he has mentioned my name and he has created a feeling as if we have given certain respectability to Anand Marg. Therefore, either you should allow me to make a personal explanation of the whole thing tomorrow, or that part of his statement should not go on record.

Sir, I have my information that other agencies are working under the cover of Anand Marg. These types of people are making a dangerous mistake. The mastermind behind all kinds of sabotages is also there. It may be that the Anand Margis are partly there. But I use the word specifically 'Master-mind'; it is working behind all kinds of sabotage in India and outside also. They are providing real camouflage for the real mastermind to work in the country and outside. The master-mind is indulging in acts of sabotage inside the country and working outside the country to tarnish our national image. They want to create a condition of chaos and anarchy. That master-mind is working behind all these things. We have to find that out. Don't allow camouflage of all the sabotage activities under the name of the Anand Margis.

(iii) Reported Damage to Standing Crops by Hail Storm in Certain Districts of Madhya Pradesh

श्री यमुना प्रसाद शास्त्री : (रींवा) : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अन्तर्गत इस सदन का ध्यान एक बहुत बड़ी राष्ट्रीय विपत्ति की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। श्रीमन्, मध्य प्रदेश में फरवरी में एक बड़ी भयंकर ओला-वृष्टि हुई। यह उसी तरह की विपत्ति थी, जैसी पिछले दिनों आन्ध्र प्रदेश और तामिलनाडू में आई थी। यद्यपि जन-हानि उतने बड़े पैमाने पर नहीं हुई, लेकिन धन-हानि का जहां तक सवाल है, मध्य प्रदेश पूरी तरह से उस विपत्ति की चपेट में आ गया है। शीतकालीन वर्षा के कारण रबी की फसल बहुत अच्छी दिखाई पड़ने लगी थी, परन्तु रीवा, सतना, सीधी, सागर, जबलपुर और मांडला ज़िलों में इतनी भयंकर ओला-वृष्टि हुई, जितनी पिछले 100 वर्षों में कभी नहीं हुई।

मैं पिछली 18 तारीख को रीवा जिले के गड़गंज तहसील में गया था। वहां इतनी भारी ओला-वृष्टि हुई है कि लोगों ने मुझे भी और वहां के अधिकारियों को भी ओले लाकर दिखाए और कहा कि इतनी भारी ओला-वृष्टि पिछले सौ सालों में नहीं हुई। इसका नतीजा यह हुआ कि वहां की सारी फसल नष्ट हो गई है। गेहूं का नामोनिशान नहीं है। खरीफ की फसल तो अनि वर्षा के कारण पहले ही अच्छी नहीं थी। ज्वार, दाल और तिलहन की फसलें तो नष्ट हो ही गई थीं, अब गेहूं की फसल का भी एक दाना नहीं रह गया है।

आज श्रीमन्, स्थिति यह हो गई है कि फसल ही खराब नहीं हुई है, गरीबों के मकानों के खपड़े तक चूर-चूर हो गए हैं। उनके पास रहने को छाया तक नहीं रही है। यह एक राष्ट्रीय विपत्ति है और इसकी ओर केन्द्रीय सरकार का ध्यान जाना चाहिए और फौरन इसके लिए सहायता पहुंचानी चाहिए। अभी जो उनसे तकावी की वसूली हो रही है, इसको रोका जाना चाहिए। जब उनके पास आज खाने को नहीं है तो वे इस कर्जे का भुगतान कैसे कर सकते हैं।

मध्य प्रदेश में इस ओला-वृष्टि से भयंकर अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। समूचा मध्य प्रदेश इसकी चपेट में है। इसलिए मैं चाहूंगा कि केन्द्रीय सरकार इसमें रुचि ले। अब यह केवल राज्य का ही कार्य नहीं रह गया है। समूचे देश की जनता को, मध्य प्रदेश की जनता की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। इस भयंकर ओला-वृष्टि में पशु मर गये, लोगों के मकान ढह गये और उनकी फसलें नष्ट हो गयीं। इसलिए श्रीमन्, मैं चाहूंगा कि पुराने कर्जों की जो वसूली की जा रही है इसे फौरन रोका जाना चाहिए। यही नहीं अगर उन्हें खाद्य के लिए, बीज के लिए और सहायता नहीं दी जाएगी तो आगे अनाज पैदा होने वाला नहीं है। वर्तमान रबी फसल के लिए जो खाद और बीज की तकावी दी गई थी उसे माफ किया जाना चाहिए क्योंकि वह फसल 50 प्रतिशत चौपट हो गई है।

मध्य प्रदेश के लोगों से इस विपदा में न केवल कर्जों की वसूली न की जाए बल्कि हर पंचायत में उनके लिए राहत कार्य भी शुरू किये जाएं और युद्धस्तर पर शुरू किये जाएं जिससे कि उन्हें जिनके पास पैसा नहीं है, कोई काम नहीं हैं, अनाज मिल सके। यहां तक कि मुफ्त भोजन का भी इंतजाम उन लोगों के लिए होना चाहिए जो वृद्ध, अशक्त और निराश्रित हैं।

श्रीमन्, मैं आपके माध्यम से, प्रधान मंत्री जी से और केन्द्रीय शासन से अनुरोध करूंगा कि वह इस महान विपदा में मध्य प्रदेश की सहायता करें और प्रधान मंत्री सहायता कोष से तथा भारत सरकार के आपत्कालीन कोष से मध्य प्रदेश की जनता को सहायता पहुंचाएं।

MR. SPEAKER: Shri Laxmi Narain Nayak. The same thing should not be repeated because the hon. Member has already covered the whole thing.

(iv) Reported damage to standing crops by hail strom in Chhattarpur district of Khajuraho, Madhya Pradesh

श्री लक्ष्मी नारायण नायक: (खजुराहो): श्रीमन्, मैं नियम 377 के अधीन मध्य प्रदेश में जो ओला-वृष्टि हुई है, उस की ओर सरकार का ध्यान खींचना चाहता हूं। मध्य प्रदेश के कई जिलों में यह ओलावृष्टि हुई है। खास कर खजुराहो के टीकमगढ़ व छतरपुर जिलों में तो इतने भारी ओले पड़े हैं कि वहां के मकानों में उनके निशान इस तरह से दिखाई देते हैं जैसे कि गोलियों के निशान हों। वहां के लोगों की फसल नष्ट हो गई है, मवेशी मर गये हैं। फसल तो इस तरह से चौपट हुई है कि कोई फसल दिखाई ही नहीं देती। इसके कारण वहां के मज़दूर और किसान चौपट हो गए हैं। आज वे लोग दाने दाने को मोहताज बन गये हैं।

इसलिए मैं चाहता हूं कि इस संकट की घड़ी में वहां के लोगों को केन्द्रीय सरकार को भी सहायता करनी चाहिए, मध्यप्रदेश की सरकार तो करेगी ही। जब केन्द्रीय सरकार सहायता करेगी, तभी लोगों का संकट दूर हो सकता है। जब तक यह सहायता उन्हें नहीं दी जाती तब तक वे आगे की फसल कैसे दे सकते हैं। आज उन्हें खाद की जरूरत है, बीज की जरूरत है, चारे की जरूरत है। पहले तो किसानों